# Job

## Chapter 31

### Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1

| בְּרִית | כָּרַתִּי | לְעֵינָי | וּמָה | אֶתְבּוֹנֵן | עַל־ | בְּתוּלָה׃ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वाचा | बांधी-मैंने | आँखों-अपनी-के-साथ | और-क्यों | देखूँ-मैं | पर | कुंवारी |
| H1285 | H3772 | | H4100 | H0995 | | H1330 |

> “मैंने अपनी आँखो के साथ एक सन्धि की है कि वे किसी लड़की पर वासनापूर्ण दृष्टि न डालें।

2

| וּמֶה ׀ | חֵלֶק | אֱלוֹהַ | מִמָּעַל | וְנַחֲלַת | שַׁדַּי | מִמְּרֹמִים׃ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और-क्या | भाग | ईश्वर-का | ऊपर-से | और-विरासत | सर्वशक्तिमान-की | ऊँचाइयों-से |
| H4100 | | H0433 | H4605 | H5159 | H7706 | H4791 |

> सर्वशक्तिमान परमेश्वर लोगों के साथ कैसा करता है वह कैसे अपने ऊँचे स्वर्ग के घर से उनके कर्मो का प्रतिफल देता है

3

| הֲלֹא־ | אֵיד | לְעַוָּל | וְנֵכֶר | לְפֹעֲלֵי | אָוֶן׃ |
|---|---|---|---|---|---|
| क्या-नहीं | विपत्ति | दुष्ट-के-लिए | और-नाश | करनेवालों-के-लिए | अधर्म-के |
| H3808 | H0343 | H5767 | H5235 | H6466 | H0205 |

> दुष्ट लोगों के लिये परमेश्वर संकट और विनाश भेजता है, और जो बुरा करते हैं, उनके लिये विध्वंस भेजता है।

4

| הֲלֹא־ | הוּא | יִרְאֶה | דְרָכָי | וְכָל־ | צְעָדַי | יִסְפּוֹר׃ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क्या-नहीं | वह | देखता-है | मार्गों-मेरे | और-सब | कदमों-मेरे | गिनता-है |
| H3808 | H1931 | H7200 | H1870 | H3605 | H6806 | |

> मैं जो कुछ भी करता हूँ परमेश्वर जानता है और मेरे हर कदम को वह देखता है।

5

| אִם־ | הָלַכְתִּי | עִם־ | שָׁוְא | וַתַּחַשׁ | עַל־ | מִרְמָה | רַגְלִי׃ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यदि | चला-हूँ-मैं | के-साथ | झूठ | और-जल्दी-की | पर | छल | पैर-मेरे |
| | H1980 | | H7723 | | | H4820 | H7272 |

> “यदि मैंने झूठा जीवन जिया हो या झूठ बोल कर लोगों को मूर्ख बनाया हो,

6

| יִשְׁקְלֵנִי | בְמֹאזְנֵי־ | צֶדֶק | וְיֵדַע | אֱלוֹהַּ | תֻּמָּתִי׃ |
|---|---|---|---|---|---|
| तौले-मुझे | तराजू-में | धर्म-के | और-जानेगा | ईश्वर | खराई-मेरी |
| H8254 | H3976 | H6664 | H3045 | H0433 | H8538 |

> तो वह मुझको खरी तराजू से तौले, तब परमेश्वर जान लेगा कि मैं निरपराध हूँ।

7

| אִם | תִּטֶּה | אַשֻּׁרִי | מִנִּי | הַדָּרֶךְ | וְאַחַר | עֵינַי | הָלַךְ | לִבִּי | וּבְכַפַּי | דָּבַק | מְאוּם׃ | פ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यदि | भटके | कदम-मेरे | से | मार्ग-से | और-पीछे | आँखों-मेरी | चला | हृदय-मेरा | और-हथेलियों-मेरी-पर | चिपका | दाग | — |
| | H5186 | | | H1870 | | | H1980 | | H3709 | H1692 | | |

> यदि मैं खरे मार्ग से हटा होहूँ यदि मेरी आँखे मेरे मन को बुरे की ओर ले गई अथवा मेरे हाथ पाप से गंदे हैं।

8

| אֶזְרְעָה | וְאַחֵר | יֹאכֵל | וְצֶאֱצָאַי | יְשֹׁרָשׁוּ׃ |
|---|---|---|---|---|
| बोऊँ-मैं | और-दूसरा | खाए | और-संतान-मेरे | उखाड़े-जाएं |
| H2232 | H0312 | H0398 | H6631 | H8327 |

> तो मेरी उपजाई फसल अन्य लोग खा जाये और वे मेरी फसलों को उखाड़ कर ले जायें।

9

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| אָרָֽבְתִּי׃ | רֵעִ֣י | פֶּ֖תַח | וְעַל־ | אִשָּׁ֑ה | עַל־ | לִבִּ֣י | נִפְתָּ֣ה | אִם־ |
| घात-में-बैठा-मैं | पड़ोसी-अपने | द्वार-के | और-पर | स्त्री | पर | हृदय-मेरा | बहका | यदि |
| H0693 | H7453 | H6607 | | H0802 | | | | |

> “यदि मैं स्त्रियों के लिये कामुक रहा होहूँ, अथवा यदि मैं अपने पड़ोसी के द्वार को उसकी पत्नी के साथ व्यभिचार करने के लिये ताकता रहा होहूँ,

10

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| אֲחֵרִֽין׃ | יִכְרְע֥וּן | וְ֝עָלֶ֗יהָ | אִשְׁתִּ֑י | לְאַחֵ֣ר | תִּטְחַ֣ן |
| दूसरे | झुकें | और-उस-पर | पत्नी-मेरी | दूसरे-के-लिए | पीसे |
| H0312 | H3766 | | H0802 | H0312 | H2912 |

> तो मेरी पत्नी दूसरों का भोजन तैयार करे और उसके साथ पराये लोग सोंये।

11

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| פְּלִילִֽים׃ | עָ֝וֺ֗ן | (וְהוּא) | [והיא] | זִמָּ֑ה | (הִיא) | [הוא] | כִּי־ |
| न्यायाधीशों-का | अपराध | और-वह | और-वह | दुष्कर्म | वह | वह | कि |
| H6414 | H5771 | H1931 | H1931 | H2154 | H1992 | H1931 | |

> क्यों क्योंकि यौन पाप लज्जापूर्ण होता है यह ऐसा पाप है जो निश्चय ही दण्डित होना चाहिये।

12

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| תְשָׁרֵֽשׁ׃ | תְבוּאָתִ֣י | וּבְכָל־ | תֹּאכֵ֑ל | אֲבַדּ֣וֹן | עַד־ | הִ֭יא | אֵ֣שׁ | כִּ֤י |
| जड़-से-उखाड़ती-है | उपज-मेरी | और-सब | खाती-है | विनाश | तक | वह | आग | कि |
| H8327 | H8393 | H3605 | H0398 | H0011 | H5704 | H1931 | H0784 | |

> व्यभिचार उस पाप के समान है, जो जलाती और नष्ट कर डालती है। मेरे पास जो कुछ भी है व्यभिचार का पाप उसको जला डालेगा।

13

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| עִמָּדִֽי׃ | בְּ֝רִבָ֗ם | וַאֲמָתִ֑י | עַבְדִּ֣י | מִשְׁפַּ֣ט | אֶ֭מְאַס | אִם־ |
| मेरे-साथ | झगड़े-में-उनके | और-दासी-अपनी | दास-अपने | न्याय-को | तुच्छ-समझा-मैंने | यदि |
| H5978 | H7378 | H0519 | H5650 | H4941 | | |

> “यदि मैं अपने दास—दासियों के सामने उस समय निष्पक्ष नहीं रहा, जब उनको मुझसे कोई शिकायत रहीं।

14

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| אֲשִׁיבֶֽנּוּ׃ | מָ֣ה | יִ֝פְקֹ֗ד | וְכִֽי־ | אֵ֑ל | יָק֣וּם | כִּֽי־ | אֶ֭עֱשֶׂה | וּמָ֣ה |
| उत्तर-दूँगा-मैं-उसे | क्या | जांचेगा | और-जब | ईश्वर | उठेगा | जब | करूँगा-मैं | और-क्या |
| H7725 | H4100 | | | H0410 | | | | H4100 |

> तो जब मुझे परमेश्वर के सामने जाना होगा, तो मैं क्या करूँगा जब वह मुझ को मेरे कर्मो की सफाई माँगने बुलायेगा तो मैं परमेश्वर को क्या उत्तर दूँगा

15

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| אֶחָֽד׃ | בָּרֶ֗חֶם | וַ֝יְכֻנֶ֗נּוּ | עָשָׂ֑הוּ | עֹשֵׂ֑נִי | בַ֭בֶּטֶן | הֲֽלֹא־ |
| एक | कोख-में | और-रचा | बनाया-उसे | बनानेवाला-मुझे | गर्भ-में | क्या-नहीं |
| H0259 | H7358 | | | | H0990 | H3808 |

> परमेश्वर ने मुझको मेरी माता के गर्भ में बनाया, और मेरे दासों को भी उसने माता के गर्भ में हीं बनाया, उसने हम दोनों ही को अपनी—अपनी माता के भीतर ही रूप दिया है।

16

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| אֲכַלֶּֽה׃ | אַלְמָנָ֣ה | וְעֵינֵ֖י | דַּלִּ֑ים | מֵחֵ֣פֶץ | אֶ֭מְנַע | אִם־ |
| धुंधला-की-मैंने | विधवा-की | और-आँखों-की | दरिद्रों-की | इच्छा-से | रोका-मैंने | यदि |
| H3615 | H0490 | | H1800 | H2656 | H4513 | |

> “मैंने कभी भी दीन जन की सहायता को मना नहीं किया। मैंने विधवाओं को सहारे बिना नहीं रहने दिया।

17

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| מִמֶּֽנָּה׃ | יָת֣וֹם | אָכַ֥ל | וְלֹא־ | לְבַדִּ֑י | פִתִּ֣י | וְאֹכַ֣ל |
| उससे | अनाथ-ने | खाया | और-नहीं | अकेले | टुकड़ा-अपना | और-खाया-मैंने |
| | H3490 | H0398 | H3808 | H0905 | | H0398 |

> मैं स्वार्थी नहीं रहा। मैंने अपने भोजन के साथ अनाथ बच्चों को भूखा नहीं रहने दिया।

18

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| אַנְחֶֽנָּה׃ | אִמִּ֣י | וּמִבֶּ֖טֶן | כְאָ֑ב | גְּדֵלַ֣נִי | מִ֭נְּעוּרַי | כִּ֣י |
| मार्गदर्शन-किया-उसे | मां-अपनी | और-गर्भ-से | पिता-की-तरह | बड़ा-किया-मैंने-उसे | यौवन-से-मेरे | कि |
| H5148 | H0517 | H0990 | H0001 | H1431 | | |

> ऐसे बच्चों के लिये जिनके पिता नहीं है, मैं पिता के जैसा रहा हूँ। मैंने जीवन भर विधवाओं का ध्यान रखा है।

| 19 | אִם־ | אֶרְאֶה | אוֹבֵד | מִבְּלִי | לְבוּשׁ | וְאֵין | כְּסוּת | לָאֶבְיוֹן׃ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | यदि | देखता-था-मैं | नष्ट-होनेवाले-को | बिना | वस्त्र | और-नहीं | आवरण | गरीब-के-लिए |
| | | H7200 | H0006 | H1097 | H3830 | H0369 | H3682 | H0034 |

जब मैंने किसी को इसलिये कष्ट भोगते पाया कि उसके पास वस्त्र नहीं हैं, अथवा मैंने किसी दीन को बिना कोट के पाया।

| 20 | אִם־ | לֹא | בֵרְכוּנִי | [חלצו] | (חֲלָצָיו) | וּמִגֵּז | כְּבָשַׂי | יִתְחַמָּם׃ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | यदि | नहीं | आशीर्वाद-दिया-मुझे | कमर-उसकी | कमर-उसकी | और-ऊन-से | भेड़ों-मेरी | गरम-हुआ |
| | | H3808 | H1288 | H2504 | H2504 | H1488 | H3532 | H2552 |

तो मैं सदा उन लोगों को वस्त्र देता रहा, मैंने उन्हें गर्म रखने को मैंने स्वयं अपनी भेड़ों के ऊन का उपयोग किया, तो वे मुझे अपने समूचे मन से आशीष दिया करते थे।

| 21 | אִם־ | הֲנִיפוֹתִי | עַל־ | יָתוֹם | יָדִי | כִּי־ | אֶרְאֶה | בַשַּׁעַר | עֶזְרָתִי׃ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | यदि | हिलाया-मैंने | पर | अनाथ-के | हाथ-अपना | कि | देखता-था-मैं | फाटक-में | सहायता-अपनी |
| | | | | H3490 | H3027 | | H7200 | H8179 | H5833 |

यदि कोई मैंने अनाथ को छलने का जतन अदालत में किया हो check यह जानकर की मैं जीतूँ,

| 22 | כְּתֵפִי | מִשִּׁכְמָה | תִפּוֹל | וְאֶזְרֹעִי | מִקָּנָה | תִשָּׁבֵר׃ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | कंधा-मेरा | कंधे-से | गिरे | और-भुजा-मेरी | हड्डी-से | टूटे |
| | H3802 | H7929 | H5307 | H0248 | H7070 | H7665 |

तो मेरा हाथ मेरे कंधे के जोड़ से ऊतर जाये और मेरा हाथ कंधे पर से गिर जाये।

| 23 | כִּי | פַחַד | אֵלַי | אֵיד | אֵל | וּמִשְּׂאֵתוֹ | לֹא | אוּכָל׃ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | कि | भय | मुझे | विपत्ति-का | ईश्वर-का | और-उसकी-महिमा-से | नहीं | समर्थ-था-मैं |
| | | H6343 | H0413 | H0343 | H0410 | H7613 | H3808 | H3201 |

किन्तु मैंने तो कोई वैसा बुरा काम नहीं किया। क्यों क्योंकि मैं परमेश्वर के दण्ड से डरता रहा था।

| 24 | אִם־ | שַׂמְתִּי | זָהָב | כִּסְלִי | וְלַכֶּתֶם | אָמַרְתִּי | מִבְטַחִי׃ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | यदि | रखा-मैंने | सोना | भरोसा-अपना | और-शुद्ध-सोने-को | कहा-मैंने | आश्रय-मेरा |
| | | | H2091 | H3689 | H3800 | H0559 | H4009 |

"मैंने कभी अपने धन का भरोसा न किया, और मैंने कभी नहीं शुद्ध सोने से कहा कि "तू मेरी आशा है!"

| 25 | אִם־ | אֶשְׂמַח | כִּי־ | רַב | חֵילִי | וְכִי־ | כַבִּיר | מָצְאָה | יָדִי׃ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | यदि | आनंदित-हुआ-मैं | कि | बहुत | धन-मेरा | और-कि | बहुत | पाया | हाथ-मेरे-ने |
| | | H8055 | | | H2428 | | H3524 | H4672 | H3027 |

मैंने कभी अपनी धनिकता का गर्व नहीं किया अथवा जो मैंने सम्पत्ति कमाई थी, उसके प्रति मैं आनन्दित हुआ।

| 26 | אִם־ | אֶרְאֶה | אוֹר | כִּי | יָהֵל | וְיָרֵחַ | יָקָר | הֹלֵךְ׃ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | यदि | देखता-था-मैं | ज्योति | कि | चमकती-है | और-चंद्रमा | शोभायमान | चलता-है |
| | | H7200 | H0216 | | | H3394 | H3368 | H1980 |

मैंने कभी चमकते सूरज की पूजा नहीं की अथवा मैंने सुन्दर चाँद की पूजा नहीं की।

| 27 | וַיִּפְתְּ | בַּסֵּתֶר | לִבִּי | וַתִּשַּׁק | יָדִי | לְפִי׃ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | और-बहका | गुप्त-में | हृदय-मेरा | और-चूमा | हाथ-मेरे-ने | मुंह-अपने |
| | | | | | H3027 | H6310 |

मैंने कभी इतनी मूर्खता नहीं की कि सूरज और चाँद को पूजूँ।

| 28 | גַּם־ | הוּא | עָוֺן | פְלִילִי | כִּי־ | כִחַשְׁתִּי | לָאֵל | מִמָּעַל׃ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | भी | वह | अपराध | न्यायाधीश-का | कि | झुठलाया-मैंने | ईश्वर-को | ऊपर-से |
| | H1571 | H1931 | H5771 | H6416 | | H3584 | H0410 | H4605 |

यदि मैंने इनमें से कुछ किया तो वो मेरा पाप हो और मुझे उसका दण्ड मिले। क्योंकि मैं उन बातों को करते हुये सर्वशक्तिशाली परमेश्वर का अविश्वासी हो जाता।

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| רָע׃ | מְצָאוֹ | כִּֽי־ | וְהִתְעֹרַרְתִּי | מְשַׂנְאִי | בְּפִיד | אֶשְׂמַח | אִם־ | 29 |
| बुराई-ने | पाया-उसे | जब | और-उत्तेजित-हुआ-मैं | नफ़रत-करनेवाले-की-मुझसे | विपत्ति-में | आनंदित-हुआ-मैं | यदि | |
| | H4672 | | H5782 | H8130 | H6365 | H8055 | | |

> “जब मेरे शत्रु नष्ट हुए तो मैं प्रसन्न नहीं हुआ, जब मेरे शत्रुओं पर विपत्ति पड़ी तो, मैं उन पर नहीं हँसा।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| נַפְשֽׁוֹ׃ | בְּאָלָה | לִשְׁאֹל | חִכִּי | לַחֲטֹא | נָתַתִּי | וְלֹא־ | 30 |
| प्राण-उसका | शाप-से | मांगने-को | तालू-अपने-को | पाप-करने-को | दिया-मैंने | और-नहीं | |
| H5315 | H0423 | H7592 | H2441 | H2398 | H5414 | H3808 | |

> मैंने अपने मुख को अपने शत्रु से बुरे शब्द बोल कर पाप नहीं करने दिया और नहीं चाहा कि उन्हें मृत्यु आ जाये।

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| נִשְׂבָּע׃ | לֹא | מִבְּשָׂרוֹ | יִתֵּן | מִי־ | אָהֳלִי | מְתֵי | אָמְרוּ | לֹא | אִם־ | 31 |
| तृप्त-होते-हम | नहीं | मांस-उसके-से | देगा | कौन | तंबू-अपने-के | लोगों-ने | कहा | नहीं | यदि | |
| H7646 | H3808 | H1320 | H5414 | H4310 | H0168 | H4962 | H0559 | H3808 | | |

> मेरे घर के सभी लोग जानते हैं कि मैंने सदा अनजानों को खाना दिया।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| אֶפְתָּח׃ | לָאֹרַח | דְּלָתַי | גֵּר | יָלִין | לֹא־ | בַּחוּץ | 32 |
| खोलता-था-मैं | यात्री-के-लिए | दरवाज़े-अपने | परदेशी | रहता-था | नहीं | बाहर | |
| | H0734 | | H1616 | | H3808 | H2351 | |

> मैंने सदा अनजानों को अपने घर में बुलाया, ताकि उनको रात में गलियों में सोना न पड़े।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| עֲוֺנִי׃ | בְּחֻבִּי | לִטְמוֹן | פְּשָׁעָי | כְאָדָם | כִּסִּיתִי | אִם־ | 33 |
| अधर्म-अपना | सीने-में-अपने | छिपाने-के-लिए | अपराधों-अपने | आदम-की-तरह | छिपाया-मैंने | यदि | |
| H5771 | H2243 | H2934 | H6588 | H0121 | H3680 | | |

> दूसरे लोग अपने पाप को छुपाने का जतन करते हैं, किन्तु मैंने अपना दोष कभी नहीं छुपाया।

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| לֹא־ | וָאֶדֹּם | יְחִתֵּנִי | מִשְׁפָּחוֹת | וּבוּז־ | רַבָּה | הָמוֹן | אֶעֱרוֹץ׀ | כִּי | 34 |
| नहीं | और-चुप-रहता-था-मैं | डराता-था-मुझे | कुलों-का | और-तिरस्कार | बड़ी | भीड़-से | डरता-था-मैं | कि | |
| H3808 | | H2865 | H4940 | H0937 | | | H6206 | | |
| | | | | | | | פָתַח׃ | אֵצֵא | |
| | | | | | | | दरवाज़े-से | निकलता-था-मैं | |
| | | | | | | | H6607 | H3318 | |

> क्यों क्योंकि लोग कहा करते हैं कि मैं उससे कभी नहीं डरा। मैं कभी चुप न रहा और मैंने कभी बाहर जाने से मना नहीं किया क्योंकि उन लोगों से जो मेरे प्रति बैर रखते हैं कभी नहीं डरा।

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| אִישׁ | כָּתַב | וְסֵפֶר | יַעֲנֵנִי | שַׁדַּי | תָּוִי | הֶן־ | לִי | שֹׁמֵעַ | לִי׀ | יִתֶּן־ | מִי | 35 |
| व्यक्ति-ने | लिखे | और-पुस्तक | उत्तर-दे | सर्वशक्तिमान | चिह्न-मेरा | देखो | मुझे | सुननेवाला | मुझे | देगा | कौन | |
| H0376 | H3789 | | | H7706 | H8420 | H2005 | | H8085 | | H5414 | H4310 | |
| | | | | | | | | | | | רִיבִי׃ | |
| | | | | | | | | | | | विवाद-मेरे | |
| | | | | | | | | | | | H7379 | |

> “ओह! काश कोई होता जो मेरी सुनता! मुझे अपनी बात समझाने दो। काश! शक्तिशाली परमेश्वर मुझे उत्तर देता। काश! वह उन बातों को लिखता जो मैंने गलत किया था उसकी दृष्टि में।

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| לִי׃ | עֲטָרוֹת | אֶעֶנְדֶנּוּ | אֶשָּׂאֶנּוּ | שִׁכְמִי | עַל־ | לֹא | אִם־ | 36 |
| अपने-लिए | मुकुटों-की-तरह | बांधूँगा-उसे-मैं | उठाऊँगा-उसे-मैं | कंधे-अपने | पर | नहीं | यदि | |
| | H5850 | H6029 | H5375 | H7926 | | H3808 | | |

> क्योंकि निश्चय ही मैं वह लिखावट अपने निज कन्धों पर रख लूँगा और मैं उसे मुकुट की तरह सिर पर रख लूँगा।

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| אֲקָרְבֶנּוּ׃ | נָגִיד | כְּמוֹ־ | אַגִּידֶנּוּ | צְעָדַי | מִסְפַּר | 37 |
| निकट-आऊँगा-उसे-मैं | राजकुमार-के-सामने | जैसे | बताऊँगा-उसे-मैं | कदमों-अपने-की | गिनती | |
| H7126 | H5057 | H3644 | H5046 | H6806 | H4557 | |

> मैंने जो कुछ भी किया है, मैं उसे परमेश्वर को समझाऊँगा। मैं परमेश्वर के पास अपना सिर ऊँचा उठाये हुये जाऊँगा, जैसे मैं कोई मुखिया होऊँ।

38

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| אִם־ | עָלַי | אַדְמָתִי | תִזְעָק | וְיַחַד | תְּלָמֶיהָ | יִבְכָּיוּן׃ |
| यदि | मुझ-पर | भूमि-मेरी | चिल्लाए | और-एकसाथ | क्यारियाँ-उसकी | रोएं |
| | | H0127 | H2199 | | H8525 | H1058 |

> “यदि जिस खेत पर मैं खेती करता हूँ उसको मैंने चुराया हो और उसको उसके स्वामी से लिया हो जिससे वह धरती अपने ही आँसुओं से गीली हो।

39

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| אִם־ | כֹּחָהּ | אָכַלְתִּי | בְלִי־ | כָסֶף | וְנֶפֶשׁ | בְּעָלֶיהָ | הִפָּחְתִּי׃ |
| यदि | शक्ति-उसकी | खाई-मैंने | बिना | चांदी | और-प्राण | मालिकों-उसके | निकाला-मैंने |
| | | H0398 | H1097 | H3701 | H5315 | H1167 | H5301 |

> और यदि मैंने कभी बिना मजदूरों को मजदूरी दिये हुये, खेत की उपज को खाया हो और मजदूरों को हताश किया हो,

40

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| תַּחַת | חִטָּה | יֵצֵא | חוֹחַ | וְתַחַת־ | שְׂעֹרָה | בָאְשָׁה | תַּמּוּ | דִּבְרֵי | אִיּוֹב׃ | פ |
| तब | गेहूँ-की-जगह | उगे | कांटा | और-जगह | जौ-की | जंगली-झाड़ी | समाप्त-हुए | वचन | अय्यूब-के | — |
| H8478 | H2406 | H3318 | H2336 | H8478 | H8184 | H0890 | H8552 | H1697 | H0347 | |

> हाँ! यदि इनमें से कोई भी बुरा काम मैंने किया हो, तो गेहूँ के स्थान पर काँटे और जौ के बजाये खर—पतवार खेतों में उग आयें।” अय्यूब के शब्द समाप्त हुये!